MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

CLASS:-M.A 1ST SEM(HISTORY)

SUBJECT:- HISTORY OF HARYANA (EARLIEST TIME TO SULTANATE) (MC)

M.A Ist Year Important Questions

(PAPER-4) (History of Haryana)

Q-1. प्राचीन हरियाणा के इतिहास के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख कीजिए।

Ans:- हरियाणा 27° 39' से 30° 55' उत्तरी अक्षांश और 74° 28' से 77° 36' पूर्व देशांश के मध्य स्थित है। इसकी सीमाएं पंजाब, राजस्थान हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली के साथ लगती है, इसका कुल क्षेत्रफल ४२,212 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल तथा जनसंख्या के आधार पर यह प्रदेश काफी छोटे स्वरूप वाला है। परन्तु फिर भी भारतीय इतिहास में इस क्षेत्र की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। किसी राष्ट्र के इतिहास को सही प्रकार से समझने के लिए क्षेत्रीय इतिहास का वस्तुपरक अध्ययन बहुत जरूरी है।

प्राचीन हरियाणा के स्त्रोत :—

इतिहास में निश्चित रूप से देश, काल एवं परिस्थिति में पल्लवित समाज का चित्रण होता है। मनुष्य ने जब से इस धरती पर अपना पांव रखा है तब से उसका इतिहास आरम्भ हो जाता है।

साहित्यिक स्त्रोत :—

किसी भी क्षेत्र, देश या राष्ट्र का इतिहास जानने के लिए साहित्यिक स्त्रोतों का बहुत ज्यादा महत्व होता है।

1. **वैदिक साहित्य :—** अधिकतर इतिहासकारों का मानना है कि ज्यादातर वैदिक साहित्य वेद, उपनिषद, आरण्यक, आदि की रचना हरियाणा क्षेत्र में ही हुई थी। वेद चार है — ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद।

2. **जैन साहित्य :—** जैन साहित्य हरियाणा के प्राचीनतम इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। मुख्यत धार्मिक ग्रंथ है — भद्रबाहु के कल्पसूत्र, हेमचन्द्र के परिशिष्ट पर्व, कथाकोष आदि है।

3. **बौद्ध साहित्य :—** बौद्ध साहित्य से भी हरियाणा के प्राचीन इतिहास के विषय में काफी उपयोगी तथा महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती है। बौद्ध साहित्य में त्रिपटक, जातक पाली ग्रंथ तथा संस्कृत बौद्ध ग्रंथो का विशेष महत्व है।

4. **महाभारत :—** कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था। इसलिए इस ग्रंथ में हरियाणा के इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण स्रोतों का होना स्वाभाविक ही है।

Date
Page

कुरुक्षेत्र, करनाल, आदि, कैथल आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

5. पुराण :- पुराण का शाब्दिक अर्थ होता है प्राचीन इनकी कुल संख्या 18 है।

6. अष्टाध्यायी :- व्याकरण के इस महान ग्रंथ की रचना छठी शताब्दी ई.पू. में हुई थी। यह महान विद्वान पाणिनी द्वारा रचित है।

7. हर्षचरित :- सम्राट हर्ष के दरबार के विद्वान एवं कवि बाणभट्ट द्वारा इस ग्रंथ की रचना संस्कृत भाषा में की गई थी।

Date
Page

8. विदेशियों के वृत्तांत :- भारत में विदेशी यात्रियों का आवागमन प्राचीनकाल से ही प्रचलित है। अतः समय - समय पर भारत आने वाले विदेशी यात्रियों व लेखकों के विवरण से भी हमें हरियाणा को जानने में काफी सहायता मिलती है।

2. पुरातत्व संबंधी स्रोत :- पुरातत्व वह विज्ञान है जिसके माध्यम से धरती में छिपी हुई सामग्रियों की खुदाई पर प्राचीन काल के लोगों पर भौतिक जीवन के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

1. अभिलेख :- किसी भी क्षेत्र के इतिहास का अध्ययन करने में अभिलेख महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हरियाणा के इतिहास के पुनः निर्माण में भी अभिलेखों

का महत्वपूर्ण योगदान है।

(i) तोपरा अभिलेख :- यह स्तम्भ सम्राट अशोक के समय का है, जिस पर उस समय के सात आभिलेख खुदे हुए लिपि ब्राह्मी है। इसकी

(ii) पेहोवा अभिलेख :- इस अभिलेख का निर्माण लगभग 905 ई. के आसपास किया गया है।

(iii) सिरसा अभिलेख :- यह अभिलेख उस समय की हरियाणा की धार्मिक दशा को समझने से हमारी सहायता करता है।

(iv) अग्रोहा टबलेट :- अग्रोहा से टबलेट तांबे का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हमें प्राप्त हुआ है।

आधुनिक स्रोत :- प्राचीन हरियाणा के इतिहास के निर्माण में आधुनिक स्रोत के योगदान को भी कम करके नहीं आंका जा सकता है।

1. पुस्तकें :- आज के समय में प्राचीन हरियाणा के इतिहास की जानकारी देने वाली अनेकों पुस्तकें उपलब्ध है। आधुनिक काल के विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखी गई ये पुस्तकें हरियाणा के इतिहास को जानने में हमारी काफी सहायता करती है।

2. पत्रिकाएं :- आधुनिक पत्रिकाओं से भी हमें प्राचीन हरियाणा से संबंधित काफी उपयोगी जानकारियां प्राप्त होती है।

Date
Page

Q.2. क्षेत्रीय इतिहास के अर्थ बतलाते हुए, राष्ट्रीय इतिहास से इसका अन्तर, यदि कोई है, तो बतलाइए।

Ans. क्षेत्रीय इतिहास का अर्थ जानने से पहले इतिहास का अर्थ जानना बहुत आवश्यक है। इतिहास का अर्थ है। निश्चित रूप से ऐसा हुआ। इतिहास किसी का भी हो सकता है। किसी व्यक्ति का, किसी देश का, किसी वंश का या फिर किसी क्षेत्र का इतिहास मे किसी। व्यक्ति, वंश क्षेत्र या देश के अतीत की हर ऐतिहासिक घटना का अध्ययन किया जाता है।

क्षेत्रीय इतिहास का अर्थ - क्षेत्रीय इतिहास का अर्थ है - देश के किसी विशेष क्षेत्र के इतिहास का

Date
Page

अध्ययन प्राचीन काल मे प्रचलित उदारवाद, राष्ट्रवाद आदि विचारधाराओं से प्रेरित होकर इतिहासकार केवल राष्ट्रीय इतिहास पर ही बल देता है।

क्षेत्रीय इतिहास का क्षेत्र

किसी भी क्षेत्रीय इतिहास के अन्तर्गत उस क्षेत्र की भाषा, रीति - रिवाज रहन - सहन व उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति आदि का अध्ययन किया जाता है। किसी क्षेत्र के लोगों पर उसके पड़ोसी क्षेत्र मे रहने वाले लोगो की राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक प्रक्रिया का थोड़ा - बहुत प्रभाव जरूर पड़ता है।

क्षेत्रीय इतिहास के उद्देश्य

क्षेत्रीय इतिहास का मूल उद्देश्य है - किसी भी क्षेत्र का वास्तविक

Date ____ Page ____

एवं वस्तुनिष्ठ इतिहास बिना किसी पक्षपात के लिखना।

भारत में क्षेत्रीय इतिहास लेखन

क्षेत्रीय इतिहास लिखने की शुरुआत भारत में 19वीं शताब्दी से हुई। भारत के अनेक इतिहासकार भारत को एक राष्ट्र नहीं मानते थे, इसलिए, उन्होंने भारत की संस्कृति के साथ साथ उसके विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति को समझना भी बहुत जरूरी समझा।

हरियाणा में इतिहास लेखन

20वीं शताब्दी के अन्त में हरियाणा का इतिहास लिखना आरम्भ हो चुका था। प्रो. के. सी. यादव ने हरियाणा का इतिहास नामक पुस्तक का लेखन किया।

Date ____ Page ____

Q.3. हरियाणा में सिन्धु सभ्यता के पुरास्थलों पर एक टिप्पणी लिखिए।

Ans. सिन्धु या हड़प्पा सभ्यता की खोज से भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई है इस सभ्यता की खोज ने भारतीय इतिहास को महान गौरव प्रदान किया है। इस सभ्यता की खोज से पहले लगभग है सिन्धु सभ्यता विशुद्ध रूप से पूरी तरह भारतीय सभ्यता थी इस दुनिया की सबसे प्रथम नगरीय सभ्यता होने का भी गौरव है। भारत के इतिहास में सन 1921 और सन 1922 को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके फलस्वरूप इसी सभ्यता से सम्बन्धित कुछ नगर (मिताथल, बनावली, राखीगढ़ी, भगवानपुर, दौलतपुर, शीशवाल बालू तथा मिर्जापुर) हरियाणा क्षेत्र से भी मिले हुए हैं।

Date ______
Page ______

हड़प्पा सभ्यता की खोज

डा० विपिन बिहारी सिन्हा के अनुसार जॉन ब्राण्टन नाम का एक अंग्रेज अधिकारी सन् 1856 में मुल्तान से लाहौर तक रेलवे लाइन बिछवाने का काम कर रहा था। उसे सिन्धु नदी के पास हड़प्पा नामक गाँव में एक टीला दिखाई दिया। 1861ई० में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक कनिंघम ने इस स्थान की यात्रा की। एम० एल० जेम्स द्वारा 1866 ई० में तथा फ्लीट महोदय द्वारा 1912 ई० में हड़प्पा संस्कृति की कुछ मुद्राओं से संबंधित चित्र प्रकाशित करवाए गए। 1925 ई० में राखलदास बनर्जी को हड़प्पा जैसी वस्तुएं मोहनजोदड़ो से भी प्राप्त हुई। हरियाणा से सम्बन्धित हड़प्पा पुरा स्थलों की खुदाई का कार्य 1968 ई० में शुरू हुआ जो निरन्तर जारी है।

सभ्यता का काल

हड़प्पा सभ्यता के काल निर्माण में सभी इतिहासकार एक मत नहीं है। पर जॉन मार्शल ने इसे 5000 ई०पू० की, डा० पुसालकर ने 2800 - 2500 ई०पू० के बीच, डा० व्हीलर ने इसे 2500 - 1500 ई०पू० के मध्य की सभ्यता कहा है। इसका कार्यकाल 2800 से 1750 ई०पू० निर्धारित किया

Date ______
Page ______

सभ्यता के निर्माण

कर्नल स्यूल तथा डा० गुहा जैसे इतिहासकारो ने इस सभ्यता के निर्माण के रूप में किसी एक जाति को स्वीकार नहीं किया है। इसलिए ये लोग इस सभ्यता का श्रेय मिश्रित जाति के समूह को देते हैं। गार्डन चाइल्ड, जॉन मार्शल का मानना है कि खुदाई में प्राप्त नर कंकाल में भूमध्य सागरीय नस्ल की है। अधिकतर विद्वानों का मानना है कि सैंधव सभ्यता का उद्भव पश्चिम में न होकर भारत में ही हुआ है।

हरियाणा में हड़प्पा सभ्यता के मुख्य स्थल

भारत पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान तक इस सभ्यता से संबंधित नगर प्राप्त हुए हैं। इस आधार पर इस सभ्यता का सम्पूर्ण क्षेत्र ~~1400~~ 12 लाख वर्ग किमी० है।

1. बनावली

– हरियाणा में फतेहाबाद से लगभग 14 Km स्थित यह नगर बनावली हिसार जिले में स्थित है। बनावली हड़प्पा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण नगर है, इस नगर की खुदाई 1974 ई० में आरम्भ हुई। इसमें अनेक प्रकार के जानवरों के चित्र बने हुए हैं। सभी वस्तुओं के अवशेषों से पता चला ये हड़प्पा संस्कृति

Date
Page

2- मिताथल

:- यह नगर हरियाणा के भिवानी जिले मे स्थित है। इस हड़प्पा स्थल की खुदाई पंजाब विश्वविद्यालय के डा० सूरजभान द्वारा 1968 ई० में की गई थी। खुदाई में प्राप्त अवशेषो के आधार पर कहा जा सकता है कि यहाँ धनवान लोग रहते थे। यहाँ के प्राचीन टीले से भी हमे सीसवाल संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए है।

3- राखीगढ़ी

:- यह हड़प्पा स्थल हरियाणा के हिसार जिले मे स्थित है। यह सबसे विशाल नगर था। इस नगर तथा हड़प्पा के बीच लगभग 350 कि०मी० की दूरी है। हड़प्पा सभ्यता के नगरो की तरह दो भागो मे विभाजित था। किसी समय यह हड़प्पा सभ्यता का अत्यंत प्रसिद्ध केन्द्र रहा।

4- भगवानपुर

:- वर्तमान में यह छोटा सा गांव है जो कुरुक्षेत्र जिले मे है। इसका निर्माण एक नगर योजना के अनुरूप किया गया। हड़प्पा सभ्यता तथा आर्य सभ्यता के लोग साथ-साथ रहते थे। इस नगर की खुदाई से प्राप्त अवशेष हरियाणा प्रदेश के इतिहास निर्माण में मूल्यवान प्रमाणित हुए है।

Date
Page

5. दौलतपुर

:- यह हड़प्पा स्थल वर्तमान कुरुक्षेत्र जिले मे छोटा सा गाँव है। यहा डा० सूरजभान तथा डा० यू०वी० सिंह ने सन् 1968-70 व 1976-78 मे किया था। यह नगर भी अन्य हड़प्पाई नगरो की तरह शतरंज की बिसात के अनुरूप बसा है।

6- बालू

:- बालू वर्तमान मे एक छोटा सा गाँव था। जो हरियाणा जिले के कैथल जिले मे स्थित है।

7. सीसवाल

:- यह नगर भी अपने समय में हड़प्पा का प्रसिद्ध नगर था। जो वर्तमान मे हिसार जिले में है। यहा के लोग नगरीय सभ्यता से जुड़े हुए थे। यहा नगरो का निर्माण निश्चित योजना के अनुसार होता था।

Q.4 हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना का वर्णन कीजिए।

Ans:- हड़प्पा सभ्यता से संबंधित बहुत सी वस्तुएं हरियाणा क्षेत्र से भी प्राप्त हुई है। इनका अध्ययन करने बाद यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता निश्चित रूप से एक उच्चकोटि की नगरीय सभ्यता थी।

1. **नगर :-** हरियाणा मे हड़प्पा सभ्यता से संबंधित जितने भी नगर हमे प्राप्त हुए है उनको देखकर साफ पता चलता है कि उनको एक निश्चित नगर-योजना के अनुरूप बसाया गया था। ये सभी नगर हड़प्पा सभ्यता के अनुरूप दो भागो मे विभाजित थे जिनमे ऊंचे टीले पर सम्पन्न वर्ग के लोग रहते थे।

2. **भवन :-** हड़प्पा सभ्यता की नगर-योजना को देखकर एक बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि यहां के लोगो को भवन-निर्माण कला का अच्छा ज्ञान था। घरो को बनाने से पहले प्रायः ऊंचे चबूतरो का निर्माण किया जाता था। मकानो मे कच्ची तथा पक्की दोनो प्रकार की ईंटो का प्रयोग होता था।

3. **नालियो की व्यवस्था :-** हरियाणा मे हड़प्पा सभ्यता से संबंधित जितनी भी खुदाई हुई, उनमे प्राप्त नालियो की व्यवस्था पूर्णतः हड़प्पा सभ्यता की नालियो का ही अनुसरण करती है। हड़प्पा सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओ मे एक है — नालियो की उत्तम व्यवस्था।

Date
Page

5. सड़के :- सैंधव सभ्यता से संबंधित सभी नगरों से हमें लगभग एक जैसी सड़कों के अवशेष प्राप्त हुए है। तथा हरियाणा से संबंधित हड़प्पाई स्थल भी इसके अपवाद नहीं है। इन सड़कों की चौड़ाई 13 फुट से 34 फुट तक होती थी। इन सड़को पर रात के समय रोशनी की उचित व्यवस्था थी।

Date
Page

Qs. हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण थे।

Ans. विद्वानों का मानना है कि 1700 ई. पू. के आसपास इस महान कांस्ययुगीन सभ्यता के पतन के लक्षण दिखाई देने लगे थे। हड़प्पा सभ्यता का पतन भी इस तथ्य का अपवाद नहीं है। हरियाणा में भी हड़प्पा सभ्यता के स्थलों के पतन के वही कारण थे।

1. आर्यों का आक्रमण :- इतिहासकार इस मत से पूरी तरह से सहमत है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग काफी शांतिप्रिय थे। हमें इस सभ्यता के उत्खनन से किसी प्रकार का कोई हथियार नहीं मिला है। और न ही घोड़े का कोई प्रमाण मिला है। इससे उपरोक्त कथन को प्रमाणिकता प्राप्त होती है।

2. बाढ़ :- सभी जानते है कि हड़प्पा सभ्यता का निर्माण तथा विकास नदियों के किनारे हुआ था। नदियों की उपजाऊ भूमि ने ही उनका आर्थिक जीवन समृद्ध बनाया था।

3. महामारी :- विद्वानों का मानना है कि यहां के लोगों में भयंकर बीमारी फैल गई थी, जैसे - मलेरिया या प्लेग। आगे चलकर इस बीमारी ने महामारी का रूप धारण कर लिया होगा। उस समय चिकित्सा तथा विज्ञान का इतना विकास नहीं हुआ था।

4. भूकम्प :- कुछ विद्वानों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता जिस क्षेत्र में निर्मित व विकसित थी, वहां पर जबरदस्त भूकम्प आया होगा।

5. अग्नि :- हड़प्पाई स्थलों के उत्खनन से हमें कई स्थानों से राख के बड़े-बड़े ढेर प्राप्त हुए है। इसके उदाहरण के लिए रोना घुंडई, नाल, डाबरकोट तथा कालीबंगा का नाम लिया जा सकता है।

6. बदलती जलवायु :- कुछ विद्वानों का तर्क है कि इस सभ्यता का पतन जलवायु परिवर्तन के कारण हुआ था। आरल स्टाइन तथा ए. एन घोष इस मत के समर्थक है। उनका कहना कि जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा होनी बंद हो गई।

7. प्रशासनिक शिथिलता :- सर जॉन मार्शल के अनुशार सभ्यता के अन्तिम चरण में यहां के प्रशासन

मे शिथिलता आ गई थी।

8. **व्यापार मे गिरावट :—**

प्रसिद्ध इतिहासकार आर. एस. शर्मा के अनुसार व्यापार मे गिरावट आना ही इस सभ्यता के पतन का मुख्य कारण था।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि किसी एक कारणो से इस सभ्यता का पतन नही हुआ था।

Q76. वैदिक आर्यो के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिए।

Ans:— आर्य शब्द का अर्थ होता है श्रेष्ठ। यह संस्कृत भाषा का शब्द है वैदिक लोगो ने आर्य शब्द का प्रयोग अपनी जाति के लिए किया था, कुछ इतिहासकारो का मानना है कि आर्य लोग मध्य एशिया के मूल निवासी थे।

आर्यो का हरियाणा मे आगमन

कभी भी आर्यो का हरियाणा मे कब आगमन हुआ यह कहना बहुत कठिन है आर्यो के साहित्य मे न कोई ठोस परिणाम मिला और न ही कोई तिथि लिखी थी कि आर्य लोग कब हरियाणा मे आये इसलिए इस विषय पर कुछ विद्वानो मे एकमत नही है। कुछ इतिहासकारो का मानना है कि 1500 ई. पू.

से 1500 ई. पू. के बीच में आर्यों ने हरियाणा क्षेत्र में प्रवेश किया था।

आर्य - अनार्य का युद्ध

जब आर्य लोग छोटी-छोटी टोलियों के रूप में उत्तरी भारत पहुंचे तो वहां पर रहने वाले मूल निवासियों के साथ युद्ध हुआ। हरियाणा में हड़प्पा संस्कृति की खुदाई करने पर पता चलता है।

आर्यों का सामाजिक जीवन :-

विद्वानों का मानना है कि आर्य 1500 ई. पू. 1000 ई. पू. के बीच में भारत आये थे। 1000 ई. पू. में आर्यों ने लोहे का प्रयोग करना सीख लिया था। उन्होंने लोहे की दरांती, कुल्हाड़ी, कावड़, हंसिया इत्यादि।

वैदिक समाज की विशेषताएं :-

वैदिक समाज की विशेषताएं निम्नलिखित है।

सामाजिक संगठन :-

वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार थी। वैदिक काल में परिवार के मुखिया को कुलप या परिवार का रक्षक कहते थे।

कबायली समाज :-

वैदिककाल का समाज छोटे-छोटे कबीले में बंटा हुआ था। जिसमे राजा कबीले का स्थायी होता था। कबायली समाज ने वर्गभेद की परिस्थितियों को बढ़ावा नहीं दिया बल्कि निर्वाह - अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया था। कबायली समाज बड़े-बड़े राज्यों में विकसित होने लगा था। आर्य समाज चार वर्गों में बांटा गया - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र।

Date
Page

स्त्रियो की स्थिति

:- ऋग्वैदिक काल में स्त्रियो का खूब सम्मान होता था। पुत्री के पैदा होने पर कोई दुखी नहीं होता था। स्त्रियो का सम्पत्ति पर अधिकार होता था। जनसाधारण लोग सम्पत्ति पर अधिकार नहीं समझते थे। पुत्रियो को भी पिता का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। इस काल में विदुषी स्त्रिया थी जिन्होने वेदो का पूरा ज्ञान प्राप्त किया था।

आभूषण तथा शृंगार

:- वैदिक काल में आर्य लोग विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनते थे। निष्क तथा रुक्मन गले तथा छाती पर पहने जाने वाले आभूषण थे। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार स्थानीय नाम सुगंधित पदार्थ का आभूषण बनाया जाता था।

विवाह

:- वैदिक काल में स्त्रियों का विवाह करना बहुत ही शुभ समझा जाता था। इस काल मे बाल विवाह का भी प्रचलन था। इस काल मे कन्या का विवाह 16 से 20 वर्ष मे होता था। वैदिक काल मे कितनी उम्र में विवाह किया जाता था। इसका उल्लेख नहीं मिलता है।

Date
Page

आश्रम व्यवस्था

:- आश्रम व्यवस्था का वैदिक काल मे प्रचलन था। उस काल मे मानव की आयु सौ साल मानी जाती थी तथा उसे 25-25 वर्ष के अनुसार चार आश्रमो में बांटा गया था।
आश्रम व्यवस्था का अन्तिम उद्देश्य आध्यात्मिक विकास करके प्रत्येक को मोक्ष प्राप्त कराना था। संन्यास आश्रम में प्रवेश करके संसार को छोड़कर वनो में ज्ञान की खोज मे चला जाता था।

पहनावा

:- आर्य लोगो के बीच वैदिक काल तीन प्रकार के वस्त्रो का प्रचलन थी। शरीर के मध्य भाग पर पहने जाने वाले वस्त्र वास कहलाते थे। ऊपरी भाग पर पहने वाले वस्त्र अधिवास कहते है। निचले भाग पर पहने वाले वस्त्र नीवि कहते है। वैदिक काल के राजाओ के कपडो में सोना तथा चाँदी लगा होता था।

भोजन

:- वैदिक काल मे आर्य लोग खान पान पर विशेष ध्यान रखते थे। वे लोग जमीन पर बैठकर भोजन करते थे। वे लोग स्वच्छता पर विशेष ध्यान

Date ______
Page ______

देते थे।

वर्ण व्यवस्था :- वर्ण शब्द का अर्थ होता है रंग। वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था। ऋग्वेद के अनुसार वर्ण व्यवस्था दो भागों में बंटी हुई थी। जो इस प्रकार है :- आर्य वर्ण दास वर्ण

(i) आर्य वर्ण :- ये वे लोग होते थे जो ईमानदार, अच्छे चरित्र, अच्छे स्वभाव अच्छे गुण वाले होते थे।

(ii) दास वर्ण :- ये वे लोग होते थे जो बेईमान, गंदे चरित्र वाले थे। तथा जिनमें अच्छे गुण नहीं होते थे।

Date ______
Page ______

Q.7. कुरुओं के इतिहास पर एक लेख लिखिए।

Ans:- वैदिक संस्कृति धीरे-धीरे गंगा-यमुना दोआब के क्षेत्र तक फैल गई थी। इस क्षेत्र में राजनीतिक संगठन तैयार होने लगे। समय के साथ ये राजनीतिक संगठन राज्यों में बदलते गये अतत: पौरव वंश के प्रतापी राजा दुष्यंत ने एक मजबूत राज्य की स्थापना की राजा सुदास ज्यादा दिनों तक अपने द्वारा स्थापित राज्य को सुरक्षित नहीं रख सका। इस राज्य का पुरोहित महान विद्वान वशिष्ठ था।

कुरुओं का उदय व पतन

राजा संवरण ने इस महान वंश की स्थापना की थी। तथा उसके पुत्र कुरु ने अपने वंश का नाम बदलकर कौरव कर दिया

1. कुरु :- हरियाणा में कुरु वंश की स्थापना राजा कुरु ने की थी। उसे कुरुक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। वह एक योग्य तथा शक्तिशाली शासक था तथा उसके शासनकाल में इस राज्य ने साम्राज्य का रूप धारण कर लिया था।

2. परीक्षित प्रथम :- राजा कुरु की मृत्यु के बाद उसका पुत्र परीक्षित प्रथम इस राज्य का शासक बना। वह अपने पिता के समान महान नहीं था, परन्तु वह एक योग्य शासक अवश्य था। कौरवों तथा पांडवों में कोई भी वीरता तथा साहस में एक दूसरे से कम नहीं था। दोनों ही ने उस समय के महान शिक्षक 'द्रोणाचार्य' से शस्त्र शिक्षा का ज्ञान [illegible] किया था।

2. कुरुक्षेत्र में ही युद्ध क्यों हुआ

अब तक के अध्ययन में हम जान चुके हैं कि एक ही वंश के दो परिवार उत्तराधिकार संबंधी विवाद को लेकर कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए आ चुके थे।

1. प्रथम तर्क के अनुसार पांडवों ने इस युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा दी थी।

2. विभिन्न लोककथाओं और परम्पराओं के अनुसार युद्ध के लिए क्षेत्र का चुनाव करने का अधिकार दोनों पक्षों ने श्री कृष्ण को दिया था।

3. महाभारत में वर्णित है कि कुरुक्षेत्र एक धार्मिक स्थल था।

4. आधुनिक इतिहासकारों ने उपरोक्त कारणों को काल्पनिक तथा आध्यात्मिक बताया है।

Date ______
Page ______

3. युद्ध की घटनाएँ :— कौरव सेना का नेतृत्व धृतराष्ट्र का बड़ा पुत्र दुर्योधन कर रहा था। वामन पुराण में उल्लेखित है कि कुरुक्षेत्र में एक बार स्नान करने से भी सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

उपरोक्त तर्क-वितर्क का अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था।

Date ______
Page ______

Q.18. यौधेय कौन थे? यौधेयों की हरियाणा में सफलताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans:- महाभारत के युद्ध के बाद पुराने राज्य नष्ट हो गये थे क्योंकि परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक-दूसरे को नष्ट करने में लगी हुई थी। जो राज्य बच गये थे उन्होंने अपने क्षेत्र को बढ़ाना शुरू कर दिया था ये 16 राज्य प्रसिद्ध राज्य थे इन्हें बौद्ध साहित्य में षोडस महाजनपद कहा जाता है

(1) मगध
(2) काशी
(3) कोशल
4 पांचाल
5. अंग
6 चेदी
7 वत्स
8 अवन्ती
9. कम्बोज
10 शूरसेन
11 अस्सक
12. गांधार
13. मत्स्य
14. उज्जैन
15. कुरु
16. मल्ल

कुरु राज्य हरियाणा को कहा गया था।

चंद्रगुप्त मौर्य :—

सिकंदर के जाने के बाद चंद्रगुप्त मौर्य ने तत्कालीन अराजकता का लाभ उठाते हुए उत्तरी भारत में एक विशाल राज्य की स्थापना कर डाली। चंद्रगुप्त के विषय में विद्वानों में एकमत नहीं है। विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' के अनुसार वह मुरा नाम की किसी शूद्र स्त्री का पुत्र था।

(यौधेय गण)

मौर्य साम्राज्य नष्ट हो चुका था और बाद में यहां पर गणतंत्रीय व्यवस्था की स्थापना हुई थी। यौधेयगण ने इसकी स्थापना में काफी बढ़-चढ़कर भाग लिया। माना जाता है कि युधिष्ठिर के पुत्र यौधेय से यौधेयगण की स्थापना हुई थी। युधिष्ठिर का विवाह यौधेयगण के नागरिक की कन्या से हुआ था। उसका पुत्र यौधेय कहलाया वितु पुराण में लिखा है। युधिष्ठिर का विवाह एक सुन्दर कन्या से हुआ था जो यौधेयों की कन्या थी। महाभारत के अनुसार अर्जुन व युधिष्ठिर का यौधेयों के साथ भयंकर युद्ध हुआ था।

पतन :— ऐसे वीर गण का पतन कैसे हुआ इस विषय में कोई ठोस तथ्य उपलब्ध नहीं है। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद अभिलेख से स्पष्ट होता है कि समुद्रगुप्त ने यौधेयों को पराजित किया। जूनागढ़ शिलालेख से इस बात का पता चलता है कि रुद्रदमन प्रथम ने भी यौधेयों

Date
Page

को पराजित किया।

(अग्र गण)

अग्रोहा व बरवाला से मिले सिक्कों से पता चला कि यौधेयों की तरह ही यहां दूसरा प्रसिद्ध गणराज्य अग्रो का था। अग्रो के बारे में सिक्कों के अलावा भारतीय साहित्य में भी वर्णन मिलता है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जाता है कि 5वीं सदी ई.पू. में अग्रगण हरियाणा में अग्रोहा में उपस्थित थे। सिकंदर के युद्ध के पश्चात ये मौर्यों के अधीन हो गए।

Date
Page

Q79. हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास के स्रोतों का वर्णन करो।

Ans. हरियाणा क्षेत्र पर सन् 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया और इस पर सन् 1526 ई. तक दिल्ली के सुल्तानों का अधिकार रहा। हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान करने वाले बहुत से स्रोत उपलब्ध हैं। इनमें अभिलेखागारीय सामग्री के अतिरिक्त तत्कालीन विद्वानों द्वारा लिखी गई पुस्तकें आधुनिक पुस्तकें, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं।

(1) अभिलेखागारीय सामग्री :— हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास से सम्बन्धित सामग्री भारत के कोने-कोने में है। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय दंगे-फसाद के कारण इसमें से बहुत सी सामग्री का विनाश हो गया था।

Date
Page

(2) ऐतिहासिक सामग्री :- ऐतिहासिक सामग्री के अंतर्गत पुस्तकें अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीन काल में अनेक देशी तथा विदेशी लेखकों ने पुस्तकें लिखी।

(क) ऐतिहासिक व साहित्यिक कृतियां :- इन्हें भी दो भागों में बांटा गया है - गैर हरियाणवी लेखकों की कृतियां तथा हरियाणवी लेखकों की कृतियां।

(i) गैर - हरियाणवी लेखकों की कृतियां :- इनमें महमूद गजनवी के काल की अलबरूनी द्वारा लिखी गई तहकीकात - हिंद सबसे प्राचीन पुस्तक है। इस पुस्तक में हरियाणा के तत्कालीन सामाजिक जीवन के इतिहास से सम्बन्धित तथा महमूद द्वारा थानेसर पर आक्रमण से सम्बन्धित तथा

Date
Page

अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध है। तारीखे - मुबारकशाही जो याहया बिन अहमद द्वारा लिखी गई है।

(ii) हरियाणवी लेखकों की कृतियां :- हरियाणा क्षेत्र के लेखकों ने भी हरियाणा के इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखी है। इनमें सल्तनतकाल के ठाकुर फेरु द्वारा लिखी गई पुस्तकें सबसे अधिक महत्व रखती है।

18वी शताब्दी के लेखक मुहम्मद अफजल की पुस्तक 'बिकट कहानी' तथा एक अन्य साहित्यकार की पुस्तकें 'दर्दनामा' ख्वाबनामा तथा 'मशहरनामा' में हरियाणा क्षेत्र में उर्दू साहित्य को प्रकट करने हेतु किये गये प्रथम प्रयासों से संबंधित तथा तत्कालीन सांस्कृतिक, धार्मिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियां है।

(ख) मस्तर या आल्लाह :- इस प्रकार के विवरण हरियाणा क्षेत्र से न के बराबर प्राप्त हुए है।

3. पुरातात्विक सामग्री :- मध्यकालीन इतिहास की पुरातात्विक सामग्री को दो भागो मे बांटा जा सकता है।

(क) चल सामग्री :- चल सामग्री मे अस्थायी वस्तुएं जैसे - शिलालेख, सिक्के, औजार आदि आते है। हिसार मे 12 रोहतक मे 12 झज्जर मे 11 महम मे 10 सोनीपत मे व बरवाला मे 2 तथा पानीपत मे 2 शिलालेख पाए गए है।

अंत मे हम कह सकते है कि विभिन्न तरह के साधनो का सही उपयोग कर हम मध्यकालीन हरियाणा के संस्कृति व इतिहास का सही विवरण प्राप्त कर सके।

Q-10. सतनामी कौन थे? सतनामी विद्रोह के कारण, घटनाओं व परिणामों पर प्रकाश डालिए।

Ans:- नारनौल के समीप एक छोटी सी जाति रहती थी, जिन्हे सतनामी कहा जाता था इस जाति के लोग संत रैदास के अनुयायी थे। उनका आन्दोलन भक्ति आंदोलन का रूप था ये लोग सीधा - सादा जीवन जीते थे। ये लोग मेहनत और ईमानदारी द्वारा धन कमाते थे और बुरी कमाई की कल्पना करना भी इनके लिए पाप था ये लोग खेती करके अपनी जीविका कमाते थे। ये लोग ईश्वर के सत्य मे विश्वास रखते थे। ये किसी भी प्रकार के अत्याचार को सहन नही करते थे। ये शांति और परिश्रम द्वारा अपना जीवन व्यतीत करते थे। ये लोग सिर मुंडवाते थे। इस कारण इन्हे मुण्डिया भी कहा

जाता था।

सतनामी विद्रोह का कारण :—

सतनामी लोग ईमानदारी और परिश्रम से अपनी जीविका कमाते थे। वे अपना जीवन शांति से व्यतीत करते थे। परंतु एक छोटी सी घटना के कारण उन लोगों ने विद्रोह कर दिया। एक बार एक सैनिक ने एक सतनामी को घायल कर दिया। जिसके कारण अन्य सतनामियों ने उस सैनिक को पीट दिया। सतनामियों ने इस सेना से डटकर मुकाबला किया लगभग 2000 सतनामी मारे गये और युद्ध मे सतनामियो की हार हुई। इस युद्ध मे मुहम्मद शाकी मुस्तवी के बहुत से अमीर और मुगल सैनिक मारे गये। इस युद्ध मे लगभग 14 से 15 हजार सैनिको की विशाल संख्या गई थी।

इस प्रकार 18 वी सदी मे कोई महान शक्ति नही बची थी। जो सत्ता को सम्भाल सके। उस समय केवल छोटे - छोटे राज्य ही बचे थे, इस अवस्था का लाभ अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने उठाया और 1757 से 1803 आते - आते लगभग सारे भारत पर अपना अधिकार कर लिया और भारत को अपना गुलाम बना लिया था।